ग्रहलाघवम्

चन्द्रग्रहणाधिकारः शास्त्री-III

Date 01.11.20
Page 1

तत्र प्रथमं ग्रहतात्कालिकीकरणप्रक्रियानिर्देशः —

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशविमुग्युतो ग्रहः स्यात्।
तत्कालभवस्तथाघटीघ्न्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतः स्यात्॥

अन्वयः - गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः खरसाप्तांशविमुक् युतः ग्रहः तत्कालभवः ग्रहः स्यात्, तथा घटीघ्न्याः खरसैः लब्धकलोनसंयुतः स्यात्।

तारा - गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तेः गतगम्येन गुणिता या ग्रहदिनगतिः, तस्याः खरसाप्तांशविमुक् युतः गतषष्टिभाजितलब्धांशादिना गम्ये विमुतः ग्रहः कर्तव्यः, सः तत्कालभवः तात्कालिको ग्रहः, स्यात्, तथा घटीघ्न्याः घट्यादिना गतगम्यगुणितायां द्युभुक्तेः ग्रहगतेः, खरसैः षष्ट्या ६०, लब्धकलोनसंयुतः लब्धकलादिभिः हीनः गम्ये च संयुतः, ग्रहः कार्यः स तत्कालभवः ग्रहः स्यादिति।

गतगम्ये विविनक्ति - मध्यमस्पष्टाधिकारसम्मतप्रकारेण यदा ग्रहाः साध्यन्ते सः पङ्क्तिकाल इत्युच्यते, ततः प्राक्स्वेष्टकालश्चेत् तदा पङ्क्तीष्टयन्तरं गतं भवति, पङ्क्तिकालतः पश्चादिष्टकालश्चेत् तदा पङ्क्तेः इष्टकालस्य च यदन्तरं भवति तद् गम्यम् उच्यते।

भावार्थः - गत (बीता हुआ) और गम्य (आनेवाला) दिन, उस दिनसमूह से अभीष्ट ग्रह की गति को गुणा करें। जो गुणनफल हो, उसमें ६० का भाग दें। इससे अंशादि लब्धि प्राप्त होती है। गत दिवस हो तो इसको ग्रह में से घटा दें और गम्य दिवस हों, तो ग्रह में जोड़ देने पर इष्टकालिक ग्रह होता है।

P.T.O

01.11.20

ग्रहणसम्भवं चन्द्रशरसाधनं च लिख्यते —

एवं पर्वान्ते विराहर्कबाहोरिन्द्राल्पांशाः सम्भवश्चेद् ग्रहस्य।
तेंऽशा निघ्नाः शङ्कुभिः शैलभक्ता व्यगवर्कांशाः स्यात्पृषत्कोऽङ्गुलादिः॥

अन्वयः – एवं पर्वान्ते विराहर्कबाहोः, चेत् इन्द्राल्पांशाः ग्रहस्य सम्भवः। ते अंशाः शङ्कुभिः निघ्नाः शैलभक्ताः अङ्गुलादिः पृषत्कः व्यगवर्कांश स्यात्।

तारा – एवं पूर्वोक्तप्रकारेण, पर्वान्ते पर्वान्तसमये ग्रहः साध्यः स्यात् तर्हि, विराहर्कबाहोः राहुरहितसूर्यभुजस्य, चेत् यदि, इन्द्राल्पांशाः चतुर्दशतोऽपि स्वल्पांशाः स्युः तदा ग्रहस्य ग्रहणस्य, सम्भवः स्यात्। चतुर्दशाधिके ग्रहणस्य सम्भवो न। तदा ते अंशाः, शङ्कुभिः एकादशभिः (११), निघ्ना गुणिताः, तदनु शैलभक्ताः सप्तभिः (७) हृताः करणीयाः, तदा अङ्गुलादिः पृषत्कः शरः, व्यगवर्कस्य राहूनसूर्यस्य या आशा दक्षिणोत्तररूपा, तद्दिशाकान् शरः स्यात्।

भावार्थः – पर्वान्तकालिक सूर्यस्पष्ट में से राहुस्पष्ट को घटाने पर जो शेष रहे, उसे व्यगवर्क कहते हैं। अर्थात् वह संख्या जो सूर्य में से राहु के घटाने से प्राप्त हुई हो, उसको व्यगवर्क कहते हैं। उसके बाद व्यगवर्क के भुज करें। फिर इसके अंश बनाएँ। वे अंश यदि १४ अंश से कम हों, तो ग्रहण होगा।

डॉ० सुदिवट कुमार
सहा० प्राचार्य (ज्योतिष)
रा० उ० सं० महावि० कुरवसे
पूर्णियाँ।

इसी प्रकार गत अथवा गम्य घड़ियों से ग्रह की गति को गुणा करें। प्राप्त गुणनफल में ६० का भाग दें। जो लब्धि हो उसको कलादि समझें। उस लब्धि को यदि गत घटी हो तो उसको ग्रह में से घटा दें और यदि गम्यघटी हो, तो ग्रह में जोड़ दें। योगफल इष्टकालिक ग्रह होता है। इस लब्धि को चालन कहते हैं। उक्त क्रिया करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि चन्द्रमा और सूर्य के ग्रहण के सम्बन्ध में पञ्चाङ्ग में पौर्णमासी और अमावस्या जितनी घड़ी तक हो इन घड़ियों से मध्यमसूर्य, चन्द्रोच्च और राहु का चालन करें। उसके बाद स्पष्टीकरण करें। तत्पश्चात् सूर्य और चन्द्रमा से तिथि की घड़ियों का साधन करें। इन घड़ियों को पञ्चाङ्ग की घड़ियों में जोड़े अथवा घटायें। इसको जोड़ने-घटाने की प्रक्रिया को इस प्रकार समझें— यदि १४ अथवा २९ गततिथि हो, तो वर्तमान अमावास्या या पौर्णमासी से जितनी गतघड़ियों का साधन करना हो, उनको पञ्चांग की पर्वघड़ियों में जोड़ दें और यदि १५ अथवा ३० गततिथि प्राप्त हो, तो वर्तमान प्रतिपदा से गतघड़ी का साधन कर उनको पंचांग की घड़ियों में से घटा देने से पर्वान्तकाल का साधन होता है। इस प्रकार जो 'गत-गम्य' घड़ी प्राप्त हो उनसे ग्रहों को चालन दें। ऐसा करने से पर्वान्तकालिक ग्रह होते हैं।

गत-गम्य विवेचन— मध्यम स्पष्टाधिकार प्रकरण में कही गयी विधि के अनुसार जिस समय ग्रह साधन किया जाता है, उस समय को पंक्तिकाल कहते हैं। यदि अपना इष्टकाल पंक्ति से पहले हो तो पंक्ति और इष्टकाल का अन्तर गत होता है तथा पंक्ति के बाद में इष्टकाल हो तो पंक्ति और इष्टकाल का अन्तर गम्य होता है।